



महाभारत भाषा

अनुशासन पर्व

धर्म, दान, व्रतों का फल, माहात्म्य, ग्राह्याग्राह्य वस्तु
विचार व तपस्वी, धर्मात्माओं के लक्षण
इत्यादि कथायें वर्णन हैं।

श्रीभार्गवश्रेष्ठ मुंशी लक्ष्मणसिंह जी. आई. ई., की
परिचित कालीचरण द्वारा अनुवादित।

तीसरी बार

बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., सुपरिण्टेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी लक्ष्मणसिंह जी. आई. ई., के छापेखाने में छपा
सन् १९१६ ई०।

इस पुस्तक की रजिस्ट्री नं० ३६ पर पहिली मार्च सन् १८८६ ई० को
हुई है इसकारण कोई छापने का इरादा न करे ॥